International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.4 No.7 Jan – Feb 2023

अमरकांत की कहानी दोपहर का भोजन' में निम्नमध्यवर्गीय परिवार

सियाराम मुखिया
शोधार्थी (कनीय शोधप्रज्ञ) विश्वविद्यालय हिंदी विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा
***Corresponding Author*- सियाराम मुखिया**
Email- chandsuman560@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.7714741

सारांश :

अमरकान्त कहानीकार के रूप में सन 1956 में प्रकाशित, 'कहानी' के वार्षिकांक में प्रकाशित पुरस्कृत कहानी **'डिप्टी कलक्टरी'** से अपनी पहचान बनाई। वैसे तो अमरकांत जनवादी कहानीकार के रूप में जाने जाते हैं मगर इनकी कहानियाँ वाद की सीमाओं को तोड़ती दिखाई पड़ती है। अमरकान्त की कहानियाँ कुछ पात्रों और स्थिति के माध्यम से देश के मर्म को छुती हुई दिखाई दे रही है। वह देश की स्थिति और उसमें तमाम मुसीबतों से जी रहे निम्नमध्यवर्गीय परिवारों की मार्मिक जिन्दगी को देश के सामने लाने का सफल प्रयास किया है। इनके समकालीन रचनाकारों में धर्मवीर भारती, रेणु, राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश, निर्मल वर्मा तथा कमलेश्वर आदि शामिल है। मगर अमरकांत की कहानियाँ, विषय-वस्तु और चित्रित वर्ग आदि में भिन्नता है। वह स्त्री-सौन्दर्य की बात न करके निम्नमध्यवर्गीय परिवारों और देश की यथास्थिति को अपनी कहानियों में रखना ज्यादा उचित समझते हैं। इनकी कहानियों में भारत की असली तस्वीर देखने को मिलती है।

बीज शब्द:- निम्नमध्यवर्गीय परिवार, बेरोजगारी, भुखमरी, अभावग्रस्त जिंदगी, मोहभंग, ताना-बाना, मानवीय मूल्य, बिखराव, वास्तविक यथार्थ, त्रासद जिंदगी आदि।

अमरकान्त जनवादी लेखक के रूप में अपने समय के शीर्ष लेखकों में शुमार है। इनकी कहानियाँ इनके विचारों का प्रमाण देती है। इनके द्वारा लिखित कहानी **'डिप्टी कलक्टरी'** एक चर्चित कहानी के रूप में उल्लेखित हैं। कहानियों में जमीनी स्तर की पकड़ और स्थिति का वास्तविक मर्म इन्हें ऊँचा स्थान प्रदान करती है। अन्य कहानिकारों से भिन्न इनकी कहानियाँ परिस्थिति का वास्तकित और तल्ख सत्य से पाठक वर्ग को परिचय कराता है। 'दोपहर का भोजन' कहानी एक निम्नमध्यवर्ग परिवार में घट रही मार्मिक घटनाओं का जीवंत चित्रण है। **मधुरेश** अपनी रचना **'हिन्दी काफी का विकास'** में 'दोपहर का भोजन' कहांनी की विशेषताओं को रेखांकित करते हुए लिखते हैं- **"'दोपहर का भोजन' में जिस निमर्म तटस्थता के साथ, एक परिवार के माध्यम से, समूचे निम्नमध्यवर्ग के त्रासद अभावों को अंकित किया गया है, अपने समय की मूलधारा को अतिक्रमित कर पाने के कारण आज भी उस कहानी का ऐतिहासिक महत्व है।"**[1] मधुरेश में उनकी कहानियों की विशेषता को ही अंकित नहीं किया, बल्कि अमरकांत की कलाबाजी और रचना धर्मिता को भी रेखांकित किया है। इनकी कहानी 'दोपहर का भोजन' में अभावग्रस्त परिवार की दैनीय व बदहाली से समूचे मध्यवर्गीय परिवारों की स्थिति से अवगत कराती है।

'दोपहर का भोजन' कहानी के केन्द्र में **मुंशी रामचन्द्र प्रसाद बाबू** का परिवार है जो अभावों के साये में अपनी जिन्दगी काट रहे हैं। मुंशी रामचन्द्र प्रसाद पैंताली वर्ष के है मगर नौकरी से छाँट देने के कारण अभी भी बेरोजगार है। पत्नी सिद्धेश्वरी अपने तीन बच्चे रामचन्द्र, मोहन और प्रमोद के भरण-पोषण में ही व्यस्त रहती है। घर को संभालना तथा जिम्मेदारी का सही निर्वहण करना कितना कठीन होता है, वह सिद्देश्वरी की स्थिति देखने से पता चल जाता है। घर में हर प्रकार के अभाव होने के वाबजूद वह अपना कर्तव्य निभाना अच्छी तरह से जानती है। भारतीय नारी का स्वरूप और अभाव की पीड़ा में भी वह कैसे खुद को दुःख झेलते हुए अपना मम्मत्व बनाए रखी है, वह इस पंक्ति से स्पष्ट होता है- "सिद्धेश्वरी ने खाना बनाने के बाद चूल्हे को बुझा दिया और दोनों घुटनों के बीच सिर रखकर शायद पैर की अंगुलियों या जमीन पर चलते चीटें-चींटियों को देखने लगी। अचानक उसे मालूम हुआ कि बहुत देर से उसे प्यास लगी है। वह मटवाले की तरह उठी और गगरे से लोटा भर पानी लेकर गटगट चढ़ा गयी। खाली पानी उसके कलेजे में लग गया और वह 'हाय राम' कह कर वहीं जमीन पर लेट गयी।"[2] जीवन में अभावों का आना और जाना लगा ही रहता है मगर उन अभावग्रस्त जिन्दगी में भी जो अपने कर्तव्यों से डिगे नहीं, उसका साक्षात्कार प्रस्तुत कहानी में सिद्धेश्वरी के रूप में देखने को मिलता है। अमरकांत ने इस कहानी में चित्रित मुंशी रामचन्द्र प्रसाद बाबू की परिवार के माध्यम से सम्पूर्ण भारतीय मध्यवर्गीय परिवारों की अभाव और त्रासद से जूझती जिन्दगी को यथार्थ के धरातल पर उपस्थित करने की सफल कोशिश किये हैं।

अमरकांत की कहानियों का रचना-स्वरूप उनके आसपास घटी वास्तविक घटनाओं की काली सच्चाई से सनी हुई है। लेखक ने अपनी रचना कौशल से व्हाँ के परिवेशों में घूले आवों-हवा तक को अपने कहानी के माध्यम से आकार देने में सफलता दिखलाई है। मधुरेश ने अमरकान्त की कहानियों में झाँकते पारिवारिक स्थिति को परिवेश के अनुकूल प्रस्तुत करने की जरूरत को महसूस किया। वह उपर्युक्त विशेषताओं को ध्यान रखते हुए लिखते हैं- "उनकी कहानियों का रचना-संसार अपने आस-पास के परिचित और जीवंत परिवेश से निर्मित है। जीवन का वैविध्य, उसकी ताजगी और अनगढ़ता ही उनकी कहानियों का सबसे बड़ा आकर्षण है। अपने समय-संदर्भों की पहचान की दृष्टि से अमरकांत की कहानियाँ, उनके किसी भी समकालीन दूसरे लेखक की न तो फार्मूलेबाजी की शिकार हैं और न ही प्रचारवाद की।"[3] समकालीन लेखकों में अमरकांत का महत्व क्या था, इस बात की पुष्टि उपर्युक्त पंक्तियों से हो रही हैं। इनकी कहानियाँ पाठक को निम्नमध्यवर्गीय परिवार के यथार्थ को दिखलाता है। इनकी कहानियाँ किसी फार्मूला या प्रचारवाद से प्रभावित नहीं है, बल्कि उन लेखकों में शामिल हैं जिनकी विचारधारा और मानसिकता गरीबों और असहाय परिवारों से प्रत्यक्ष संबंध रखती है।

मुंशी रामचंद्र प्रसाद के परिवार में तीन बच्चे है। बड़ा लड़का स्थानीय दैनिक समाचार पत्र के दफ्तर में प्रूफरीडरी का काम सीखता था और मँझला लड़का इस साल हाई स्कूल का प्राइवेट इम्तहान देने की तैयारी कर रहा था। छोटा बेटा अभी मात्र छ: वर्ष का है। घर में खाने-पीने की डिक्कत है। मुंशी रामचन्द्र प्रसाद की पत्नी सिद्धेश्वरी घर और बच्चों को सँभालने तथा उनको खुश रखने के लिए कभी-कभी झूठ भी बोलती है। शायद यह सब उस परिस्थिति की देन है, जो उनके परिवार के साथ स्थाई रूप से जुड़ गया है। वह अपने पति का इंतजार करती है, ताकि वह सबको खाना खिला सके और खुद को भी भोजन से अवगत, यह किस हालात का सामना कर रही है, यह पहले भी दिखाया जा चुका है। घर की परिस्थिति को प्रस्तुत पंक्ति स्पष्ट कर देती है- "उसकी दृष्टि ओसारे में अध-टूटे खटोले पर सोये अपने छ: वर्षीय लड़के प्रमोद पर जम गयी। लड़का नंग-धड़ंग पड़ा था। उसके गले तथा छाती की हड्डियां साफ दिखाई देती थीं। उसके हाथ-पैर बासी ककड़ियों की तरह सूखे तथा बेजान पड़े थे और उसका पेट हँडियां की तरह फूला हुआ था, उसका मुँह खुला हुआ था और उस पर अनगिनत मक्खियाँ बैठ-उड़ रही थीं। वह उठी, बच्चे के मुँह पर अपना एक फटा, गंदा ब्लाउज डाल दिया और एक-आध मिनट सुन्न रहने के बाद बहार के दरबाजे पर जा कर किवाड़ की आड़ से गली निहारने लगी।"[4] कहानी का यह दर्दनाक और भयावह रूप आत्मा को सीधा झकझोर देती है। यह उपस्थित घटना कोई कोरी कल्पना नहीं, बल्कि एक निम्नवर्गीय परिवार का वह काला सच है, जो जिन्दगी की वास्तविकता के रहस्य को उद्घाटित करती है। यह एक निम्नमध्यवर्ग के परिवार का यथार्थ परक वस्तु-स्थिति से अवगत कराता है।

घर की स्थिति कुछ ज्यादा अच्छी नहीं है। दो वक्त का खाना भी मुस्किल से बन पाता है। कहानी में इस करुण दृश्य को साफ़-साफ़ दिखलाया गया है। आजादी के बाद का भारत अमरकांत की कहानियों में स्पष्ट रूप धारण की हुई है। बेरोजगारी का दंश धीरे-धीरे निचले पायदान पर अवस्थित समाज को किस तरह अपना चारा बना रही है, जहाँ लोग बीमारी से कम, भूख से ज्यादा मर रहे हैं। वह अपनी परिस्थितियों में उस परिन्दे की भाँति फरफरा रहा है, जो पिंजरे से उड़ने की कितनी भी कोशिश कर ले मगर वह उस पिंजरे को तोड़ कर आजाद नहीं हो सकता। सिद्धेश्वरी खाना बना चुकी है। दोपहर का समय हो चला है मगर वह खाती नहीं है। वह अपने बड़े बेटे रामचन्द्र और अपने पति का इन्तजार कर रही है। भोजन पर पहुँचे सभी की दृष्टि रसोई घर पर एक बार जरूर जाती है, शायद सभी के लिए प्राप्त भोजन नहीं है। कहानी की पंक्ति भी उसी ओर इशारा करती है। निम्न पंक्ति से हम समझ सकते हैं- "सिद्धेश्वरी ने चौंकते हुए पूछा, "एक रोटी देती हूँ?" मोहन ने रसोई की ओर रहस्यमय नेत्रों से देखा, फिर सुस्त स्वर में बोला, "नहीं।" सिद्धेश्वरी ने गिड़गिड़ाते हुए कहा, "नहीं, बेटा, मेरी कसम, थोड़ी ही ले लो। तुम्हारे भैया ने एक रोटी ली थी।[5] सिद्धश्वरी कभी-कभी झूठ भी बोलती है, जैसा की पहले बताया गया है। एक माँ का हृदय कितना विशाल हो सकता है, उसका वास्तविक प्रतिरूप अमरकांत ने 'दोपहर का भोजन' कहानी में सिद्धेश्वरी जैसे आदर्श पात्र के रूप में दिखलाया है। घर में भोजन पर्याप्त रूप में मौजूद नहीं रहने पर भी वह अपने बच्चों को भूखा रखना या देखना नहीं चाहती है। वह मोहन से झूठ बोलती है कि तुम्हारे भैया ने भी एक रोटी और खाया था, मगर मोहन स्थिति को भाँप लेता है और रोटी लेने से यह कहते हुए मना कर देता है कि उससे अब और नहीं खाया जायेगा। यहाँ पर कहानी का उदात्त रूप सामने आता है। अमरकान्त अपनी रचनात्मक कौशल से समय के आगे-आगे कदम रखते नजर आते हैं। वह समकालीन समाज की मार्मिक और वास्तविक नब्ज को पकड़ना अच्छी तरह से जानते हैं।

मध्यवर्गीय परिवारों की अपनी एक विशेष तरह की समस्याएँ होती है, जिसे वह जीवनपर्यंत जूझता रहता है। भूखमरी, बेरोजगारी, और त्रासद जिन्दगी से परेशान यह वर्ग दो वक्त का रोटी तक सही से नहीं कमा पाता है। बच्चे अगर बीमार नहीं पड़े, उन्हें किसी तरह की महामारी ने चपेट में नहीं लिया तो ठीक, अगर चपेट में ले लिया तो खेल खत्म। सभी लोगों का पेट भरना भी परिवार के लिए एक चैलेंज की ही बात है। सब को खाना खिलाने के बाद अंत में जब सिद्धेश्वरी खाने जाती है, तब वह दृश्य कैसा कारुणिक है, प्रस्तुत पंक्ति से पता चलता है। एक माँ की ममता क्या

होती है, वह यहाँ देखा जा सकता है। अमरकांत ने कहानी में लिखा है- "रोटियों की थाली को भी उसने पास खींच लिया। उसमें केवल एक रोटी बच्ची थी। मोटी भद्दी और जली उस रोटी को वह जूठी थाली में रखने जा ही रही थी कि अचानक उसका ध्यान ओसारे में सोये प्रमोद की ओर आकर्षित हो गया। उसने लड़के को कुछ देर तक एकटक देखा, फिर रोटी को दो बराबर टुकड़ों में विभाजित कर दिया। एक टुकड़े को तो अलग रख दिया और दूसरे टुकड़े को अपनी जूठी थाली में रख लिया। तदुपरान्त एक लोटा पानी लेकर खाने बैठ गयी। उसने पहला ग्रास मुँह में रखा, और तब न मालूम में कहाँ से उसकी आँखों से टपटप आँसू चूने लगे।"[6] सिद्धेश्वरी की आँखों से निकल रही आँसू उनके दर्द, पीड़ा, बेबसी, अभाव-ग्रस्त जीवन, और विकट, त्रासद और जीवांतक समय की है जो उन्हें चारों ओर से घेर रखी है। अमरकांत गरीब और पीछड़े समाज के कहानीकार है। इन्होंने अपनी कलात्मक अनुभव से निम्नमध्यवर्ग परिवार की एक ऐसी स्पष्ट रेखा खींची है कि वहाँ सब कुछ सत्य से बुना हुआ ताना-बाना मालूम पड़ते हैं। लेखक ने अपनी विद्वता का प्रमाण इस कहानी में दिया है।

निस्कर्ष:- अमरकांत की कहानियाँ वस्तुत: एक ऐसे कहानीकार की कहानियाँ है जो अपने कहानी के लिए सारा जरूरी आबो-हवा और त्रासद जिंदगियों की परिस्थियाँ सीधे लेने में विश्वास करता है। वे एक पक्षधर लेखक हैं- लेकिन कहानी के कलात्मक एवं संदर्भ वैविध्य को ध्यान में रखते हुए रचाव की शर्तों पर। 'दोपहर का भोजन' कहानी इस बात का प्रमाण है कि अमरकांत कलात्मक रचाव के खिलाड़ी है, मगर अपनी शर्तों पर बनी विचारधारा के, शायद इसलिए इनकी यही विशेषता इन्हें अपने समकालीन कहानीकारों में विशेष बनाता है। प्रस्तुत कहानी में निम्नमध्यवर्ग की उन सारी पारिवारिक घटनाओं, उतार-चढ़ाव, विषम परिस्थितयां टुटते-बनते मानवीय मूल्यों का वैशिष्ट्य, सब कुछ एक साथ समाविष्ट कर दिये है। यही कला अमरकान्त के तेवर को प्रमाणित करता है। वर्तमान समय में यह कहानी और भी प्रासंगिक मालूम पड़ते हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ-सूची :

1. मधुरेश, 'हिन्दी कहानी का विकास', पृष्ठ-157, सुमित प्रकाशन, यू.एफ. 42, अलोपशंकरी अपार्टमेंट 107 /177, अलोपीबाग, इलाहाबाद, नवम् संस्करण : 2018

2. मर्किण्डेय, 'प्रासंगिक कहानियाँ', पृष्ठ-124, लोकभारती प्रकाशन 15-ए, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद-1, संस्करण : 2005.

3. मधुरेश, 'हिन्दी कहानी का विकास', पृष्ठ-158, सुमित प्रकाशन, यू.एफ. 42, अलोपशंकरी अपार्टमेंट 107 /177, अलोपीबाग, इलाहाबाद, नवम् संस्करण : 2018

4. मर्किण्डेय, 'प्रासंगिक कहानियाँ', पृष्ठ-124, लोकभारती प्रकाशन 15-ए, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद-1, संस्करण : 2005.

5. वही, पृष्ठ-128.

6. वही, पृष्ठ-131.